Nai Dunia (Indore), 14th July 2024, Nai Dunia City, Page-I

आइआइटी इंदौर के 12वें दीक्षा समारोह के मुख्य अतिथि डा. समीर वी कामत (सचिव रक्षा अनुसंधान एवं विकास और चेयरमैन डीआरडीओ) ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। • राजू पवार

युवाओं में नवाचार की क्षमता अधिक

आइआइटी के 12वें दीक्षा समारोह में डीआरडीओ के चेयरमैन डा. कामत ने किया संबोधित

देश के युवाओं में नवाचार करने की क्षमता काफी अधिक है। उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देने की जरूरत है। यही वजह है कि डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं में युवाओं को मौका दिया है। ये सभी अच्छा काम कर रहे हैं, जिससे देश का भविष्य उज्ज्वल है। युवाओं की बदौलत टेक्नोलाजी में तेजी से बदलाव दिखा रहा है। पहले पश्चिमी देशों की तकनीकी का अनुसरण भारत में किया जाता था, लेकिन अब भारत टेक्नोलाजी में लीडरशिप कर रहा है। यह बहुत ही अच्छे संकेत हैं।

यह बात मुख्य अतिथि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के चेयरमैन डा. समीर वी कामत ने कही। शनिवार को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर का 12वां दीक्षा समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान डा. कामत ने कहा कि आइआइटी-डीआरडीओ मिलकर सात प्रोजेक्ट पर काम को आगे बढ़ा रहे हैं। ये सभी प्रोजेक्ट देश की सुरक्षा की दृष्टि में शोध कार्य से जुड़े हैं, जिसमें विद्यार्थियों की मदद ले रहे हैं। संस्थान से बीटेक-एमटेक करने वाले विद्यार्थियों को लैब में आकर काम करने की स्वतंत्रता दी गई है। विद्यार्थी समर ट्रेनी में लैब में आ सकते हैं।

कार्यक्रम के दौरान आइआइटी के निदेशक डा. सुहास एस जोशी ने कहा कि संस्थान ने पांच जोड़ी जूते तैयार किए हैं, जो चलने के साथ ही ट्राइबो इलेक्ट्रिक एनर्जी जनरेट करते हैं। ये जूते सैनिकों के लिए बनाए हैं। ये जूते सीमा पर सुरक्षा के लिए तैनात सैनिकों के इलेक्ट्रानिक डिवाइस चार्ज करने में मदद करेंगे। अब इन्हें डीआरडीओ को दिए जाएंगे।

समारोह की अध्यक्षता बोर्ड आफ गवर्नर्स के अध्यक्ष डा. के सिवन और विशेष अतिथि आइआइएम के निदेशक डा. हिमांशु राय थे। समारोह में 673 विद्यार्थियों ने अपनी डिग्री प्राप्त की, जो संस्थान की अब तक की सबसे बड़ी बैच रही। 11 पीएचडी प्रोग्राम के 81 शोधार्थी, पांच बीटेक प्रोग्राम के 334 विद्यार्थी, नौ एमटेक प्रोग्राम के 54 विद्यार्थी, पांच एमएस (रिसर्च) प्रोग्राम के 23 विद्यार्थी और पांच एमएससी प्रोग्राम के 97 विद्यार्थी थे। इस अवसर पर आइआइएम इंदौर के साथ संयुक्त रूप से डाटा साइंस और मैनेजमेंट में एमएस के 84 छात्रों के पहले बैच को भी सम्मानित किया गया।

आइआइटी इंदौर के 12वें दीक्षा समारोह के बाद उपाधि मिलने की खुशी में विद्यार्थियों ने अंग वस्त्र उड़ाया। नईदुनिया

इन्हें मिला अवार्ड

- राष्ट्रपति स्वर्ण पदक : मुकुल जैन
- रजत पदक (स्नातक) : जतिन सतीश कुमार, नित्या चौरसिया, अमित धावले, दफ्तारी श्रीमुलभाई, वैक्यातापति साई
- रजत पदक (स्नातकोत्तर) : ऋशव शर्मा, कृष्णांगी कश्यप
- बेस्ट बीटीपी अवार्ड : सौरभ
- गोल्ड मेडल (आल राउंडर) : अभिनव यादव
- बुटी फाउंडेशन स्वर्ण पदक : कृष्णांगी कश्यप
- वीपीपी मेनन स्वर्ण पदक : कंचन समाधिया
- एमएसडीएसएम रजत पदक : दिव्यांश दुबे, सेबेस्टियन पीएस

चंद्रयान-2 से डाटा लेकर किया शोध

गोवाहाटी निवासी कृषांगी कश्यप ने एमएससी इन एस्ट्रोनोमी स्पेस इंजीनियरिंग की है। इन्हें बुटी फाउंडेशन गोल्ड मेडल और इंस्टिट्यूट सिल्वर मेडल मिला है। वे बताती हैं कि मुझे बचपन से अंतरिक्ष के बारे में जानने में काफी उत्सुकता रहती थी। इसलिए स्नोतकोत्तर में एस्ट्रोनोमी स्पेस विषय चुना है। मैंने अपने शोध में चंद्रमा की सतह के बारे में जानकारी जुटाई है। वहां की जमीन-पत्थर और अन्य वस्तुओं के बारे में डाटा एकत्र किया है। शोध के लिए मैंने चंद्रयान-2 से प्राप्त डाटा का इस्तेमाल किया है। मुझे आइआइटी में अध्ययन करने का गर्व है, क्योंकि असम से बहुत कम छात्राएं पढ़ने के लिए बाहर निकलती हैं। मेरी इस उपलब्धि के बाद वहां की लड़कियां पढ़ाई के लिए अन्य राज्यों में आएंगी।

पानी के बैक्टीरिया से बायो पालीमर पर शोध

वीपीपी मेनन गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली कंचन समाधिया को सर्वश्रेष्ठ महिला शोधार्थी के लिए अवार्ड से सम्मानित किया गया है। कंचन का शोध पानी के बैक्टीरिया से बायो पालीमर बनाने पर केंद्रित था। वे कहती हैं कि इंदौर और आसपास के इलाकों से पानी के नमूने प्राप्त किए, जिसमें कुछ बैक्टीरिया मिले। इनमें माइक्रो एलगी और परपल बैक्टीरिया एकत्र किए। इन पर प्रयोग कर बायो पालीमर प्रोडक्शन के लिए तैयार किया है। शोध में मैंने जो बायो पालीमर चुना है, उसका नाम पाली हाइडोएल्कोनोइक है। ये एक्स्ट्रा पालीमर रहता है, जिसमें प्लास्टिक जैसे तत्व मिलते हैं। इसे विकसित कर प्लास्टिक का विकल्प मान सकते है, जो बाया पालीमर के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

बनना है बिजनेसमैन

राष्ट्रपति गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाले मुकुल जैन ने कम्प्यूटर इंजीनियरिंग में बीटेक किया है। वे बताते हैं कि 2020 में आइआइटी में प्रवेश मिला। शुरुआती दो साल लाकडाउन की वजह से घर से पढ़ाई की। बाद में यहां आकर पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियां और शोधकार्य किए। अब बीटेक के बाद एक साल जाब करूंगा। उसके बाद मैनेजमेंट की पढ़ाई करने का विचार है। इसके लिए अगले साल से तैयारी करने का प्लान है, क्योंकि मुझे बिजनेसमैन बनना है।